विभावि के कार्यक्रम को संबोधित करते मंत्री • जागरण

विभावि में लगे रॉक आर्ट देखते मंत्री, कुलपति, प्रतिकुलपति व अन्य • जागरण

सन्मार्ग | हजारीबाग

संक्षिप्त

आंगनबाड़ी सेविकाओं का प्रशिक्षण आज

पहाड़ पर लगी आग कोबरा के जवानों ने बुझायी

विभावि में शैल-चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन, बोले मंत्री अमर बाउरी

शैल चित्रों में है विकास की गाथा

कार्यक्रम | विभावि में मंत्री बाउरी ने विश्वस्तरीय शैलचित्र प्रदर्शनी का किया उद्घाटन

टूरिज्म के क्षेत्र में केन्द्र बिंदु बन सकता है हजारीबाग : मंत्री

अभय सिन्हा

हजारीबाग, 13 मार्च : विनोबा भावे विवि. में मंगलवार को स्नातकोत्तर मानव विज्ञान विभाग एवं आईजीएनसीए नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में विश्वस्तरीय शैलचित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन कला, खेल एवं संस्कृति मंत्री अमर बाउरी ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर समारोह में आए अतिथियों व छात्रों को संबोधित करते हुए मंत्री श्री बाउरी ने कहा कि हजारीबाग टूरिज्म के क्षेत्र में केन्द्र बिंदु साबित हो सकता है। उन्होंने इसके लिए मेहनत व लगन के साथ काम करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि इतिहास व अतीत को लोग नहीं भूलें। गुण व दोष का परीक्षण कर आगे बढ़ने की सीख लेने की जरूरत है। पर्यटन के क्षेत्र में हजारीबाग एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बन सकता है। इसके लिए जरूरत पड़ने पर विभाग सहयोग करेगा। उन्होंने कहा कि मानव पूरे संसार में जीव जंतुओं में सबसे श्रेष्ठ व बुद्धिमान है। बुद्धि से मानव आगे निकलने का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हजारों साल का इतिहास

शैलचित्र प्रदर्शनी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते मंत्री अमर बाउरी तथा साथ में कुलपति शरण

मिल रहा है। पहले के लोग जो सोचते थे, उसे उकेरकर दिखाने का प्रयास किया गया है। उन्होंने कहा कि मानव पहले काफी सरल थे। मानव समाज के सृजन का काम कर रहे हैं।

शैलचित्र को माइनिंग से खतरा: विश्वस्तरीय शैलचित्र प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति डॉ रमेश शरण ने कहा कि शैलचित्र को खनन से खतरा है। खनन के कार्य किए जाएं इसके साथ ही साथ वहां मौजूद शैलचित्र को हटाकर दूसरे स्थान पर सुरक्षित रखने की जरूरत है। पहले की तुलना में लोग जागरूक हुए हैं व शैलचित्र को सुरक्षित जगहों पर संरक्षित करने का काम कर रहे हैं। उन्होंने दो करोड़ की लागत से जनजातीय भाषा अध्ययन केन्द्र खोलने की भी जानकारी दी। उन्होंने मंत्री अमर बाउरी से सहयोग करने की अपील भी की।

सोहराय कला शैलचित्र की देन : प्रतिकुलपति डॉ कुसुम कुमारी ने विश्वस्तरीय शैलचित्र प्रदर्शनी कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि सोहरायकला शैलचित्र की ही देन है। आदिवासियों ने आदि मानव कला को जीवंत रखने का काम किया है।

मानव की प्रथम कला आकृति शैलचित्र है : कुलसचिव डॉ बंशीधर रुखैयार ने कहा कि मानव की प्रथम कला आकृति शैलचित्र है, जो पूरे भारतवर्ष में बिखरे हैं। महाराष्ट्र व मध्य प्रदेश के शैलचित्र काफी प्रदर्शित हो रहा है। उन्होंने शैलचित्र पर छात्रों को गहराई से अध्ययन करने की भी बात कही।

विश्वविद्यालय में 5 महादेशों का शैलचित्र प्रदर्शनी शामिल : आईजीएनसीए नई दिल्ली के डॉ बी.एल मल्ला ने कहा कि विनोबा भावे विवि. देश का 15वां राज्य है जहां विश्वस्तरीय शैलचित्र प्रदर्शनी लगाया गया है। उन्होंने कहा कि झारखंड, उड़ीसा के कई क्षेत्रों में शैलचित्र मौजूद हैं, जिसे संजोने की जरूरत है। उन्होंने शैलचित्र पर विशेष व्याख्यान व कार्यशाला आयोजित करने की भी जानकारी दी।

हजारीबाग जागरण

www.jagran.com

शैलचित्र मानव विकास का पहला दस्तावेज

एक माह विभावि सभागार में चलेगी शैल चित्र प्रदर्शनी, इनके संरक्षण को खनन कंपनियां उत्पादन के साथ ही ऐहतियात भी बरतें

पत्थरों से खुल रहे परत दर परत इतिहास के राज

क्रमिक विकास यात्रा का असर हमारे शरीर पर पड़ा

भास्कर न्यूज़ | हजारीबाग

विभावि में चल रहे रॉक आर्ट प्रदर्शनी के तहत बुधवार को मानव के क्रमिक विकास पर विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। आर्यभट्ट हॉल सेंटर फोर आर्किलोजिकल स्टडीज कोलकाता के फेलो अवीक विश्वास ने मानव के विकास गाथा पर विस्तृत जानकारी दी।

अवीक ने बताया कि मानव विकास यात्रा में हमारे शरीर और अंगों में काफी परिवर्तन आया। भोजन और बदलते जीवन शैली का असर मनुष्य पर हुआ। शुरूआती दौर में मनुष्य मांसाहारी थे तो हमारे दो दांत अन्य दांतों से थोड़े बड़ थे। विकास यात्रा में हमारे भोजन का तरीका बदला और दोनों दांत दांत छोटे होते गये। मनुष्यों ने चबाने वाले दांतों का ज्यादा इस्तेमाल किया तो वे चौड़े हुए। हमारी ठोढ़ी जानवरों की तरह आगे की ओर निकली हुई थी। धीरे-धीरे ठोढ़ी धंसता गया। मनुष्य अपना पूरा भार दो पैरों पर डालता है इसलिए हमारी टांगे मजबूत हुईं। घुटने की हड्डियों के बीच का रिक्त स्थान शॉक ऑब्जर्वर की तरह करता है ताकि कूदने पर हमारी हड्डियां टूट नहीं जाए।

व्याख्यान को संबोधित करते अविक विश्वास।

अवीक ने बताया कि मानव के विकास यात्रा का अध्ययन उस समय के बनाए पत्थर के औजारों से किया जाता है। प्रागैतिहासिक इतिहास के सॉफ्ट एविडेंस भारत में नहीं मिलते लेकिन हार्ड एविडेंस काफी हैं। मानव निर्मित औजार से मानव के विकास यात्रा का अध्ययन किया जाता है। इतिहास विभाग के व्याख्याता डॉ हितेंद्र अनुपम ने मानव सभ्यता के अध्ययन में शैल शैल चित्रों की महत्ता की जानकारी विद्यार्थियों को दिया। व्याख्यान के समापन पर स्कूली बच्चों के लिए आयोजित पेंटिंग प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। आयोजन में डॉ गंगानाथ झा, डॉ विनोद रंजन, डॉ अबरार आलम, आर मिश्रा ने मुख्य भूमिका निभाया।